ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

सामाजिक आपदा (कोरोना–19) एवं वैश्विक राजनीति

Social Disaster (Corona-19) and Global Politics

Paper Submission: 12/09/2020, Date of Acceptance: 23/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

शीतल मीना
सहआचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर,
राजस्थान, भारत

सारांश

वैश्विक महामारी कोरोना (COVID-2019) एक नया वायरस संक्रमण है। यह एक संक्रामक बीमारी है। यह बीमारी चीन के वुहान प्रान्त से समग्र विश्व अमेंरिका, स्पेन, ईटली, ईरान, भारत आदि अनेंक देशो में फैलती ही जा रही है। इस वैश्विक महामारी के प्रकोप से पूरे विश्व में मानव जाति पीड़ित है। महामारी ने विश्व में महाशक्ति कहे जाने वाले अमरीका जैसे देशों की हालत ऐसी कर दी कि संभल पाना मुश्किल हो रहा है। सुपर पॉवर, कोरोना के आगे बेबस नजर आती हैं। कोरोना संकट महाशक्ति निर्धारण का पैमाना भी निश्चित ही बदलेगा। संकट से स्वयं को सुरक्षित रखने के साथ–साथ अन्य राष्ट्रों कि मदद करने वाले देशों का कद बढ़ना ही चाहिए। कोरोना महामारी ने विश्वपटल पर इस प्रश्न को रेखांकित किया हैं कि समग्र मानव जाति के कल्याण हेतु आज वैश्विक राजनीति का केन्द्र शक्ति प्रदर्शन, युद्ध एवं हथियार सामग्री की सप्लाई के स्थान पर विभिन्न बीमारियों से बचाव हेतु सहयोग पर केन्द्रित करना आवश्यक हो गया है। कोरोना के विरूद्ध संघर्ष के लिए राजनीतिक में सत्ता पाने की होड़ के स्थान पर समरसता एवं मानवीय मूल्यों को विकसित करने की है। ऐसी राजनीति जिसमें एक–दूसरे को सुनने समझने कि भावना हो। अतः आज आवश्यकता विभिन्न राष्ट्रों को संकट के समय परस्पर सहयोग करने, अपनी जनवितरण प्रणाली को सुधारने, प्रवासी मजदूरों कि बेहतर व्यवस्था करने तथा जन स्वास्थ्य सेवाओं के सुचारू संचालन कि है जिससे भविष्य में महामारी जनित चुनौतियों के समाधान में मदद मिल सके।

The global pandemic corona is a new virus infection. It is a contagious disease. This disease is spreading from Wuhan province of China to the whole world of America, Spain, Italy, Iran, India etc. in many countries. Mankind is suffering from the outbreak of this global epidemic. The epidemic has made the condition of countries like America called superpower in the world such that it is becoming difficult to recover. Super Power seems helpless in front of Corona. The scale of the Corona crisis superpower determination will also change. Along with protecting ourselves from the crisis, the countries that help other nations must grow in stature. The corona epidemic has underscored the question on the globe that today the center of global politics has become necessary for the welfare of the entire human race, instead of focusing on the support of various diseases instead of demonstrating power, war and the supply of weapons material. Instead of competing for political power in the struggle against Corona, it is to develop harmony and human values. Politics in which there is a sense of listening to each other. Therefore, today the need is for various nations to cooperate in times of crisis, improve their public distribution system, provide better arrangements for migrant laborers and maintain the smooth functioning of public health services to help solve future epidemic-related challenges.

मुख्य शब्द : कोरोना, वायरस, संक्रमण, लॉकडाउन, क्वारंटाइन, सोशल डिस्टेंसिग, आइसोलेशन, गैम्बलिंग, चाइल्ड पोर्न जीवन शैली, पर्यावरण गुणवत्ता आदि।

Corona, Virus, Infection, Lockdown, Quarantine, Social Distancing, Isolation, Gambling, Child Porn Lifestyle, Environmental Quality, etc.

प्रस्तावना

मानव एक बहुत जीवट प्रजाति है। हर तरह के संघर्ष में उसका सबसे बड़ा हथियार बनता हैं उसका मस्तिष्क। मानव ने विकास पथ में हिमयुग को पार किया, सभी प्रजातियों से ऊपर अपना स्थान बनाया। साहस, संयम के साथ एकता

भी मानव की शक्ति है। मानव ने जानलेवा टायफस पर विजय हासिल की, फिर चेचक और अन्य बीमारियों पर। टीबी अब एक बढ़ी महामारी नही बची और हैजे से गांव के गांव अब समाप्त नही होते। कोरोना वायरस के संक्रमण की तुलना स्पेनिश फ्लू से की जाती हैं जो प्रथम विश्वयुद्ध में खुदाई करने वाले चीनी मजदूरों से फैलकर यूरोप तक चला गया। दो साल कि अवधि में ही स्पेनिश फ्लू ने करोड़ो लोगो की जान जे ली।[1] भारत में भी जून 1918 में जब बंबई के समुद्रतट पर सैनिको से भरे एक जहाज ने लंगर ड़ाला। उनके साथ वही पर एक वायरस भी उतरा, जो तीन महीने में ही दक्षिण भारत के तटीय इलाकों में दाखिल होते हुए गुजरात पहुंच गया। उस समय महात्मा गांधी साबरमती आश्रम में रह रहे थे। वायरस से संक्रमित लोग जब गांधी से मिलने गये तो गांधीजी भी बुरी तरह बीमार हो गए। उस समय इस वायरस से संक्रमित लोगो का बचना विधाता की मर्जी माना जाता था। क्योंकि बीमारियों का इलाज के लिए एंटीबायोटिक्स भी नही थी। लोग इलाज के लिए हकीम व वैद्य के नुस्खे पर निर्भर करते थे। मरीजों को उपवास के लिए कहा जाता था। महात्मा गांधी ने अपना उपचार करने के लिए अपने को क्वारंटाइन (संक्रमित लोगो के संपर्क में आए व्यक्तियों को पृथक करना) किया और ठोस आहार लेना बंद कर दिया। लोगो से मिलना–जुलना बंद करके वह तरल पदार्थ तथा गरम पानी पीकर रहने लगे। इस प्रकार उन्होने क्वारंटाइन का पालन करके न केवल अपने को जीवित रखा अपितु आश्रमवासियों को भी संक्रमित होने से बचा लिया।[2] आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के अनुसार आपदा ये तात्पर्य किसी क्षेत्र में हुए उस विध्वंस, अनिष्ट, विपत्ति या बेहद गंभीर घटना से हैं जो प्राकृतिक या मानवजनित कारणों से या दुर्घटनावश या लापरवाही से घटित होती है। जिसमें बहुत बड़ी मात्रा में मानव जीवन की हानि होती है या मानव पीड़ित होता है या संपत्ति को हानि पहुंचती हैं या पर्यावरण का भारी क्षरण होता है।[3] कोरोना एक वायरस जनित महामारी हैं जिसने लोगो के संक्रमण से सामाजिक आपदा का रूप ले लिया हैं। कोरोना को कोविड़ –19 भी कहा जाता हैं। कोरोना से Co वायरस से टप और डिजिज से क इस प्रकार इसका नाम कोविड़–19 (Covid -19) हुआ।[4] विगत दौ सौ वर्षो से हम अलग–अलग वायरस से लड़ रहे है, पहली बार 1935 में इस वायरस को देखा और 1955 में वायरस की पूरी संरचना की जानकारी हुयी। इसके बाद से वायरस के खिलाफ लड़ाई में निरंतर तेजी आई।[5]

कोरोना वायरस संक्रमण से प्रभावित व्यक्ति के खासने, छीकने(Droplet infection) अथवा संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से फैलता है। कोरोना वायरस संक्रमण के उपचार हेतु कोई विशेष दवा अथवा वैक्सीन उपलब्ध नही हैं केवल लक्षणों के आधार पर उपचार किया जाता है। पहला संक्रमण चीन के वुहान शहर के जीवित जानवरों के बाजार से फैला किंतु अब यह संक्रमण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल रहा हैं। बुर्जग व्यक्ति, ह्रदय रोग, शुगर एवं फेफड़े रोग के बीमार और कम प्रतिरक्षण क्षमता वाले व्यक्ति को ज्यादा खतरा इस बीमारी से हैं। इस बीमारी में आइसोलेशन (संक्रामक रोग से ग्रस्त व्यक्ति को स्वस्थ लोगो पृथक रखना) के द्वारा संक्रमित व्यक्तियों का उपचार किया जाता है।[6]

बीजिंग और शिन्हुआ यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने चीन के सौ शहरों में वायरस के फैलाव की छानबीन के बाद पाया कि उच्च तापमान और उच्च सापेक्षिक नमी ने कोविड़–19 के प्रसार को कम कर दिया था। अमेंरिका में मैरीलैण्ड़ और मैसाचुसेट्स इंस्टीटयूट ऑफ टैक्नोलॉजी के शोधकर्ता भी इसी तरह के निष्कर्ष पर पहुंचे हैं। अभी तक किए गये अध्ययनों से यह लगता हैं कि गर्म व ऊष्ण जलवायु में वायरस के लिए एक से दूसरे व्यक्ति में फैलना मुश्किल होता है। वुहान, टोक्यों और मिलान में सर्दियों की जलवायु एक जैसी हैं इन शहरों में सर्दियों का औसत तापमान 5 से 11 सेल्सियस के बीच रहता हैं और नमी 47 से 49 प्रतिशत के बीच रहती हैं। इन तीनों शहरों में कोरोना वायरस के मामलों की संख्या बहुत ज्यादा थी। एमआइटी ने अपने अध्ययन में पाया कि अमरिका के एरिजोना, टेक्सास और फलोरिड़ा जैसे गर्म क्षेत्रों में न्यूयॉर्क और वाशिंगटन की तरह मामले सामने नही आये। उनका निष्कर्ष हैं कि ऊष्ण जलवायु के क्षेत्रों में वायरस के फैलने की संभावना कम रहती है।[7] कोरोना वायरस खिलाफ हमारी लड़ाई सिर्फ चिकित्साशास्त्र तक ही सीमित नही हैं अनेक ऑटोमोबाइल कंपनिया अपने प्लांट में गाडियों की जगह कोरोना वायरस से संक्रमित लोगो के उपचार के लिए वेंटिलेटर बनाना शुरू कर चुकी हैं। सुपर कम्प्यूटर का इस्तेमाल वायरस के खिलाफ विभिन्न परिसिथितियों को जांचने के लिए किया जा रहा है। इंटरनेट के माध्यम से सारे विश्व के वैज्ञानिक एकजुट है। आशा हैं कि जल्द ही इस महामारी का ठोस निदान हो सकेगा। किंतु तब तक सोशल डिस्टेंसिग (संक्रामक रोग प्रसार के दौरान घर के बाहर लोगो के प्रत्यक्ष संपर्क को सीमित करना) को बनाये रखना हमारी जिम्मेंदारी हैं।[8]

कोरोना संकट से वैश्विक राजनीति में आये परिवर्तन के आयामों को हम इस प्रकार इंगित कर सकते हैं–

कोरोना संक्रमण : वैश्विक स्वरूप

कोरोना को लेकर वैश्विक राजनीति का स्याह पक्ष सामने आया हैं। चीन में इस महामारी का पिछले साल दिसम्बर में एक मामला सामने आया। फरवरी में यह संक्रमण विभिन्न देशों तक पहुंच गया था। पर विश्व स्वास्थ्य संगठन के महासचिव टेड्रोस अधनोम ने 11 मार्च 2020 को इसे वैश्विक महामारी घोषित किया। जब चीन से बाहर विभिन्न देशों में इसका संक्रमण 13 गुना फैल चुका था। कुछ ही देश जो कभी प्लेग की मार झेल चुके थे और जहां ऐसी बीमारियों से निपटने का तंत्र पहलें से बना हुआ था, जल्द तैयारी कर सके। यूरोप व अमरिका समय पर इसके प्रति गंभीरता नही दिखा सके नतीजतन आज इन देशों के सर्वाधिक व्यक्ति इस महामारी सें ग्रसित हैं । जिसकी जानकारी निम्न तथ्यों से होती है–

देश	कुल संक्रमित	ठीक हुए	कुल मौते
अमरीका	6,18,325	40,098	26,290
स्पेन	1,77,637	70,853	18,579
इटली	165,155	38,092	21,645
फ्रांस	143,303	28,805	15,729
जर्मनी	1,32,747	72,600	3,592
यूके	98,476	———	12868
चीन	82,295	77,816	3,342
ईरान	76,389	49,933	4,,777
तुर्की	65,111	4,799	1,403
बेल्जियम	33,573	7,107	4,440
नीदरलैण्ड	28,153	250	3,134
कनाड़ा	27,557	8,235	954
स्विट्जरलैण्ड	26,336	14,700	1,226
ब्राजील	25,758	14,026	1,557
रशिया	24,490	1,986	198

स्रोत – राजस्थान पत्रिका 17 अप्रेल 2020 पृ. 6

इस प्रकार उपरोक्त तालिका माध्यम से हम कोरोना महामारी के वैश्विक प्रसार को जान सकते हैं।

लॉकडाउन एवं वैश्विक आर्थिक संकट

आपदा या महामारी के वक्त घर से बाहर निकलने पर लगी रोक लॉकडाउन या तालाबंदी कहलाती हैं। इस दौरान अपातकालीन सेवाओं को छोड़कर सभी सेवाओं पर रोक रहती है। कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए विभिन्न देशों द्वारा लॉकडाउन की घोषणा के कारण अर्थव्यवस्था कमजोर हुयी है। विश्लेषकों का मानना हैं कि केवल उड़ान सेवा व पर्यटन सेवा के क्षेत्र में ही रोजगार कम नही हुए हैं बल्कि दीर्घकाल तक लॉकडाउन की स्थिति में विभिन्न उद्योगो में भी रोजगार कम हुए है। अमरीका में 1975 में आई आर्थिक मंदी तुलना में 2020 में कोरोना संक्रमण के कारण गिरावट से 10 गुना ज्यादा बेरोजगारी हुयी हैं। केवल मिषिगन राज्य में ही 10 लाख से ज्यादा बेरोजगार हुए हैं। विश्व बैंक ने कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट के बारे में कहा हैं कि आंकलनों से यह 2007–2009 की आर्थिक मंदी से गंभीर प्रतीत हो रही हैं। मंदी के इस दौर में कई देशों की अर्थव्यवस्थाओं के इक्विटी बाजार धाराषाही हो चुके हैं।[10]

प्रवासी कामगारों का पलायन संकट

लॉकडाउन के कारण प्रवासी कामगार व मजदूर पलायन कर रहे हैं। अंर्तराज्यीय प्रवासी श्रमिक अधिनियम और राष्ट्रीय आपदा प्रबंध अधिनियम के अनुसार राज्यों की ओर से प्रवासी मजदूरों को पंजीकृत करना आवष्यक होता हैं जिससे कि आपदा के समय उनको राषन मिल सके। किंतु अध्ययनों से यह बात सामने आयी कि जहां प्रवासी मजदूर काम करते हैं, उस राज्य के प्रवासी मजदूरों के डाटाबेस में उनका नाम पंजीकृत नही हैं। इसी कारण उन्हे किसी योजना का लाभ भी नही मिलता हैं। स्टैन्र्डड वर्कर्स एक्शन नेटवर्क ने अपने वॉलिटिंयर्स की मदद से 11,159 मजदूरों से बातचीत करने पर पता चला कि मुंबई, बेंगलूरू एवं दिल्ली में फंसे मजदूर अपने ठेकेदार के अलावा किसी को नही जानते। अतः स्पष्ट हैं कि अधिकांश श्रमिक वर्ग पलायन की त्रासदी से बेघर होकर भटक रहा हैं।[11]

गैम्बलिंग एवं चाइल्ड पोर्न

द इकोनोमिस्ट की रिपोर्ट के अनुसार अमरिका, फ्रांस और इंग्लैण्ड़ में लॉकडाउन के दौरान जुआ और पोर्न कंटेंट देखने वाले यूजर्स की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। कई गैम्बलिंग साइट इस बात पर सट्टा लगा रही हैं कि हर रोज कितने लोग कोरोना से संक्रमित होगे या कितने लोग कोरोना से मर सकते हैं इनमें इंड़ोनेशिया, सिंगापुर और मलेशिया आदि देश प्रमुख है। इसी प्रकार चाइल्ड पोर्न से जुड़े ट्रैफिक में 95 प्रतिशत वृद्धि हुयी है। [12]

कोरोना संकट : कुछ सकारात्मक पहलू

कोरोना संकट से मानव समाज में कुछ सकारात्मक परिवर्तन भी आए है इनका विवेचन इस प्रकार कर सकते हैं–

मानव की जीवन शैली में सकारात्मक परिवर्तन

कोरोना संकट ने स्वस्थ जीवन षैली कि ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया हैं। योग, प्राणायाम न केवल षरीर को स्वस्थ बनाये रखने में योगदान करते हैं अपितु मानसिक सुदृढता भी प्रदान करते है। कोरोना संकट ने अपने लक्ष्यों से अलग अपने अर्न्तमन में झांकने का अवसर प्रदान किया है।[13] चीन के करीब होने के बावूजूद जापान में अपनी जीवन शैली और सामाजिक व्यवहार के कारण कोरोना वायरस के संक्रमण का स्तर काफी कम रहा । झुककर अभिवादन करना, साबुन से हाथ धोना, डिसइंफेक्टेड से गरारे करना और मास्क पहनना जापानी जीवन शैली में शामिल है। विशेषज्ञों का मानना हैं कि जापान में फेसमास्क का व्यापक इस्तेमाल से संक्रमण का स्तर को कम करने में अहम रहा।[14]

राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में परिवर्तन

कोरोना महामारी ने राष्ट्रों को अपनी प्राथमिकता पर विचार करने के लिए बाध्य किया हैं। वह यह कि एक राष्ट्र की प्राथमिकता अपने नागरिकों के स्वास्थ्य की सुरक्षा हैं या शक्ति का अर्जन। आज अनेक शक्तिशाली

एवं संसाधन संपन्न राष्ट्र कोविड –19 के संकट से ज्यादा ग्रसित हैं। जिसकी जानकारी उपरोक्त तालिका से होती हैं। विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली व संपन्न राष्ट्र इस महामारी से सर्वाधिक ग्रसित हुए हैं जबकि जापान व सिंगाापुर जैसे अपेक्षाकृत कम शक्तिशाली व संपन्न राष्ट्रों में इसका प्रसार कम रहा है। कारण स्पष्ट हैं राष्ट्रों प्राथमिकता।[15] उदाहरणार्थ– सिंगापुर ने कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए गुड गर्वर्नेस व डिजास्टर मैनेजमेंट पर फोकस किया। इसी कारण वहाँ 3 हजार से ज्यादा कोरोना वायरस के मामलों में सिर्फ 10 लागों की ही मौत हुई। सर्वप्रथम सिंगाापुर का एयरपोर्ट लॉकडाउन किया गया। उसके बाद सिंगाापुर मलेशिया की सीमा पूरी तरह सील की गई। यहां पर मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे और चर्च सब को बंद किया गया तथा किसी बिल्डिंग में जाने से पहले थर्मल स्कैनर से चैक किया गया । सरकारी स्तर पर सेनेटाइजर व मास्क मुफ्त में दिए गए। सोशल डिस्टैटिंग को तोड़ने वालों को 5 लाख रूपए जुर्माना व 3 माह की जेल का प्रावधान किया गया।[16]

वैश्विक पर्यावरण गुणवत्ता में अभिवृद्धि

कोरोना के कारण राष्ट्रव्यापी लॉक डाउन चलते वैश्विक पर्यावरण गुणवत्ता में अभिवृद्धि हुयी है। आज लोगो को शुद्ध व साफ हवा मिल रही हैं। जहां लोगो को ध्वनि प्रदूषण का सामना करना पड़ता था, वही आज पक्षियों का कलरव सुनाई पड़ रहा हैं। वाहनों की दुर्घटना का आंकडा शून्य पर आ गया है। भारत में 90 से अधिक षहरों में प्रदूषण के स्तर में गिरावट आयी हैं। इटली, चीन, यूके, यूएस सहित कई देशों में भी पार्टिकुलेट मैटर 2.5 का स्तर काफी नीचे आ गया है।[17] वायु प्रदूषण विश्व में मृत्युदर का पाचवां प्रमुख कारक हैं कुपोषण, शराब और शारीरिक निशक्रियता की तुलना में वायु प्रदूषण से हाने वाली बीमारियों से लोग अधिक मरते हैं स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर, 2019 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में ही साल 2017 में करीब 12 लाख लोगो की मौत वायु प्रदूषण कि वजह से हुई थी।[18] कोरोना के पर्यावरण एवं प्रकृति के प्रति किये गये सकारात्मक कार्य के लिए यह कविता सटीक जान पड़ती है –

जो काम न हुआ वर्षो से
वो एक विषाणु ने करवा दिया।।
जिन नदियों को अविरल न बना सके लोग,
वो काम खुद प्रकृति ने करवा लिया,
जिस पृथ्वी को जकड़ लिया था,
प्रदूषण ने, उससे आजाद करवा लिया,
भागती–दौडती जिंदगी पर, आराम को ब्रेक लगवा दिया,
दिया था घर (पृथ्वी) तुझे(मनुष्य) रहने के लिए,
तूने इसे कबाड़ बना दिया,
ले आज मैने (प्रकृति) इसे आजाद करवा लिया[19]
–डिजिटल शिक्षा की ओर रूझान

कोरोना संकट के दौरान लॉकडाउन कि अवधि में ई–लर्निंग कि प्रक्रिया में तेजी आयी हैं। एचआरडी के ई–लर्निंग प्लेटफार्म स्वयंम का लाभ लेने वाले पांच गुना वृद्धि हुयी एवं ढाई लाख से अधिक बार एक्सेस किया गया। डिजिटल लाइब्रेरी, एजुकेशन टीवी एवं रेडियो पर ज्ञान व कौशल से जुड़े कर्ठ कार्यक्रम मौजूद है। शिक्षा के सरेारी तंत्र में भी काफी बदलाव आया हैं। 'वर्क फ्रोम होम' के माध्यम से सरकारी कर्मचारी ई–केटैंट विकसित कर छात्रों के ज्ञान में अभिवृद्धि कर रहे हैं।[20]

कोरोना संकट : वैश्विक सहयोग के नूतन क्षितिज की तलाश

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना को महामारी का नाम दिया हैं। कोरोना महामारी और उसका अर्थव्यवस्थाओं पर असर एक वैश्विक संकट है। जिसे वैश्विक सहयोग से ही मिटाया जा सकता है। इसके लिए सर्वप्रथम सभी राष्ट्रों को सूचना का आदान–प्रदान करना होगा। अमेंरिका का कोरोना वायरस और चीन का कोरोना वायरस एक दूसरे को यह नही बता सकते कि लोगो के षरीर में कैसे घुसा जाए। लेकिन चीन, अमेंरिका को कुछ उपयोगी बाते बता सकता हैं इटली में डाक्टर सुबह खोज करता है, वह षाम तक तेहरान में लोगो की जान बचा सकती हैं। अगर ब्रिटेन की सरकार असमंजस में हैं तो वह कोरिया से बात कर सकती है, जो ऐसे ही दौर से गुजरा हैं लेकिन ऐसा होने के लिए वैश्विक सहयोग एवं विश्वास की भावना होनी चाहिए। विनम्रता से सलाह मांगनी होगी। अपने देश में ही उत्पादन करने और उपकरणों को जमा करने की कोशिश कि जगह समन्वय के साथ किया गया वैश्विक प्रयास अधिक कारगार होगा। जैसे कि लड़ाइयों के समय दुनिया के देश अपने उद्योगो का राष्ट्रीयकरण कर देते हैं, वैसे ही कोरोना से मानव की लड़ाई के दौरान जरूरी चीजों के उत्पादन को मानवीय बनाना चाहिए।

अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर भी वैश्विक सहयोग की जरूरत हैं। अर्थव्यवस्था व सप्लाई चेन की वैश्विक प्रकृति को देखते हुए अगर हर देश अपने हिसाब से चलेगा तो संकट और गहराता जायेगा। विश्व के सबसे अमीर सात देशों के नेताओं कि आपात बैठक पिछले माह टेली –कांन्फ्रेंसिस से हुई हैं जिसमें ऐसा कोई प्लान नही रखा गया जिससे दुनिया एकजुट होकर कोरोना से लड सके। 2008 के आर्थिक संकट में अमेंरिका ने वैश्विक लीड़र की भूमिका निभाई थी। लेकिन इस बार अमेंरिका ने इसे टाल दिया हैं। अमेंरिका द्वारा छोडे गये खालीपन को कोई अन्य देश नही भरता हैं तो न केवल महामारी को रोकना कठिन होगा बल्कि इसकी छाया आने वाले सालों तक अन्तर्राष्ट्रीय संबधों को जहरीला करती रहेगी। अतः आज सभी देशों को आवश्यकता अलगाव से वैश्विक एकजुटता की ओर जाने की हैं तभी हम भविष्य के उन संकटों से निपटने में मजबूत होगे जो 21 वी सदी में मानव का अस्तित्व ही मिटा सकते है।[21]

निष्कर्ष

सारतः कोरोना संकट ने हमें अनेक ज्वलंत मुद्दो पर विचार–विमर्ष के लिए बाध्य किया हैं। जिसमें सर्वप्रथम यह कि विज्ञान व तकनीकी उपलब्धियों के बावूजूद हमारी प्राकृतिक स्वस्थ जीवन शैली के साथ खिलवाड़ के गंभीर परिणाम आज हमारे समक्ष है। दूसरा किसी भी राष्ट्र कि प्रगति का आंकलन केवल संपन्नता के आधार पर नही अपितु उसके नागरिको के स्वास्थ्य एवं

उपलब्ध बेहतर चिकित्सा सुविधाओं से भी है। कोरोना जीवाणुओं को मारने के लिए डाक्टरों और नर्सिंग स्टाफ की सेना की जरूरत होगी। इसके लिए हमें न केवल अस्पताल की क्षमता बढ़ानी होगी अपितु नए अस्पताल खोलने होगे। साथ ही कोरोना फाइटर डाक्टर, नर्सिंगकर्मियों को पुलिस जैसा सम्मान देना होगा। तृतीय कोरोना के दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए सभी देशों को विभिन्न प्रकार के वायरस पर शोध की गति को बढ़ाना होगा तथा चिकित्सा विज्ञान में टेक्नोलॉजी के प्रयोग में कई गुना वृद्धि करनी होगी। चतुर्थ पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेको प्रयासों के बावूजूद आज भी पर्यावरण अवनयन चिंतनीय है। इस हेतु पर्यावरण संरक्षण के लिए वैश्विक प्रयासों में तेजी लाने की है। आज स्वामी दयानंद का 'प्रकृति कि और लौटो' वाक्य अधिक प्रासंगिक हो गया हैं। कोरोना के बाद दुनिया मनोबल, अर्थव्यवस्था, विश्वास और हैप्पीनैस सभी दृष्टियों से कमजोर होती नजर आ रही हैं इस दुनिया को स्वस्थ और खुषहाल बनाने के लिए नए सिरे से सभी देशों और समुदायों को मिलकर काम करने किः आवश्यकता हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *सृजनपाल सिंह, जीत हमारी ही होनी है, दैनिक जागरण 29 मार्च 2020 पृ. 8*
2. *हरिप्रसाद राय, संकट में एकजुटता, नवभारत टाइम्स, 6 अप्रेल 2020 पृ.8*
3. *धीप्रज्ञ द्विवेदी, भारत में प्राकृतिक आपदा प्रबंधन, योजना, जनवरी 2017 पृ. 33 पृ. 119*
4. *दिषा –निर्देशिका लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश पृ. 1–7*
5. *सृजनपाल सिंह, जीत हमारी ही होनी है, दैनिक जागरण 29 मार्च 2020 पृ. 8*
6. *दिषा –निर्देशिका लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश पृ. 1–7*
7. *मुकुल व्यास, गर्मी दिलाएगी कोरोना से राहत, दैनिक जागरण 29 मार्च 2020 पृ. 8*
8. *सृजनपाल सिंह, जीत हमारी ही होनी है, दैनिक जागरण 29 मार्च 2020 पृ. 8*
9. *राजस्थान पत्रिका 17 अप्रैल 2020 पृ. 6*
10. *राजस्थान पत्रिका 19 अप्रेल 2020 पृ. 3*
10. *राजस्थान पत्रिका 17 अप्रेल 2020 पृ. 11*
11. *दैनिक भास्कर 21 अप्रेल 2020 पृ. 12*
12. *दैनिक जागरण 29 मार्च 2020 पृ. 8*
13. *राजस्थान पत्रिका 31 मार्च 2020 पृ. 8*
14. *राजस्थान पत्रिका 31 मार्च 2020 पृ. 8*
15. *राजस्थान पत्रिका 16 अप्रेल 2020 पृ. 12*
16. *राजस्थान पत्रिका 31 मार्च 2020 पृ. 7*
17. *रवि शंकर, लॉकडान से बदल गयी आबोहवा, दैनिक जागरण 6 अप्रेल 2020 पृ. 8*
18. *गोविन्द शर्मा, नवभारत टाइम्स, 6 अप्रेल 2020 पृ.7*
19. *राजस्थान पत्रिका 20 अप्रेल 2020 पृ. 8*
20. *युवाल नोआ हरारी 'कोरोना वायरस के बाद की दुनिया' दैनिक भास्कर 16 अप्रैल 2020 पृ. 6*